महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

मानविकी एवं भाषा संकाय

संस्कृत-विभाग

एम.ए. द्वितीय सत्र

प्रश्न पत्र- चतुर्थ

पाठ्यशीर्षक- योगदर्शनम्

कोड-SNKT 2004

उपशीर्षक : श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग

प्रस्तुत कर्ता

डॉ.बबलू पाल

सहायक आचार्य

श्रीमद्भगवद्गीता का माहात्म्य

श्रीमद्भगवद्गीता न केवल एक धार्मिक ग्रंथ है अपितु मनुष्य जीवन का पथप्रदर्शक ग्रंथ भी है। मानव जीवन के लिए यह कितना प्राङ्गिक है इसे विविध शास्त्रज्ञों के कथनों से भी समझ सकते हें। गीता माहात्म्य को जानने के लिए उनके कुछ कथनों को उपस्थापित किया जा सकता है-

- गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यै: शास्त्रविस्तरै:।

  या स्वयं पद्मनाभस्य मुखपद्माद्विनिस्सृता॥
- सर्वोपनिषदो गाव: दोग्धा गोपालनन्दन:।

  पार्थो वत्स: सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत्॥
- सर्वशास्त्रमयी गीता- महाभारत
- सर्वदेवमयी गीता- स्कन्दपुराण
- तदिदं गीतशास्त्रं समस्तवेदार्थसारसङ्ग्रहभूतं दुर्विज्ञेयार्थम्’- आचार्य शङ्कर

भगवद्गीता के प्रत्येक अध्याय की पुष्पिका में कहा गया है- उपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे।

श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता

- श्रीमद्भगवद्गीता समस्त मानव जाति के लिए अत्यन्त ही उपादेय है। शरीर की नश्वरता और आत्मा की अनश्वरता का प्रतिपादन कर यह मनुष्य को विषय भोगों में लिप्त रहने से विमुख करके अनेक मानवीय समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती है।
- मनुष्य को अनासक्तभाव से कर्म करने की प्रेरणा देककर कर्म परिणाम की इच्छा का नाश करती है। वर्तमान में कर्म के साफल्य परिणाम के अभाव में घटनाएँ घटती रहती हैं, अत: इस हेतु भी इसकी उपादेयता स्वीकार की जा सकती है- *कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्..।*
- भारतामृतसर्वस्वं विष्णोर्वक्त्राद्विनिस्सृतम्।

  गीतागङ्गोदमकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते॥

ज्ञानयोग

- श्रीमद्भगवद्गीता का ज्ञानयोग मानव कल्याण के रूप में वर्णित है।
- जन्म-मरण के चक्र से सदा के लिए मुक्त कराना ही ज्ञानयोग का लक्ष्य है।
- कर्मलिप्तता से पृथक् मन और इन्द्रियों के निग्रहपूर्वक आत्मा को प्रकृति से सर्वथा विलक्षण,चेतन,निर्विकार,असङ्ग और समानाकार मानकर निरन्तर चिन्तन-मनन करते रहना ही ज्ञानयोग है। जैसा कि भगवद्गीता के तृतीय अध्याय में कहा भी गया है-

  न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।

  न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति॥ भगवद्गीता-३/४

ज्ञानयोग की महत्ता

श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग की महत्ता का भी प्रतिपादन किया गया है। जिनमें से ज्ञानयोग की महत्ता के सन्दर्भ में भगवद्गीता के ही कुछ श्लोकों को उपस्थापित किया जा सकता है जो उसकी महत्ता का प्रतिपादन करने में शक्य हैं-

- न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। श्रीमद्भगवद्गीता-४/३८
- ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति। श्रीमद्भगवद्गीता-४/३९
- सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं सन्तरिष्यसि।श्रीमद्भगवद्गीता-४/३६
- ज्ञानाग्नि: सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा।श्रीमद्भगवद्गीता-४/३७
- सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते।श्रीमद्भगवद्गीता-४/३३
- उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिन:।श्रीमद्भगवद्गीता-४/३४

ज्ञानयोग के अन्य नाम

- श्रीमद्भगवद्गीता में कर्मबन्धनों से मुक्त होना या सांसारिक बन्धनों से मुक्त हो जाना ज्ञान योग है। अत: ज्ञानयोग का स्वरूप भी अत्यन्त व्यापक माना जा सकता है। इसी कारण श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग को ज्ञाननिष्ठा,अकर्म,सन्यास,सांख्ययोग,कर्मसन्यास आदि नामों से वर्णन प्राप्त होता है।
- भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम सी सांख्ययोग है। यह सांख्ययोग ज्ञानयोग है।
- ज्ञानयोग को बुद्धियोग भी कहा जाता है क्योंकि यहाँ पर बुद्धि का अर्थ है संख्या। अत: जिससे आत्मतत्त्व का दर्शन हो वह सांख्ययोग है।
- भगवद्गीता में बुद्धि का लक्षण दिया गया है- व्यवसायात्मिका बुद्धि:।

ज्ञाननिष्ठा के रूप में ज्ञानयोग

संसारिक बन्धनों में बंधे हुए समस्त पुरुषों के लिए मोक्षेच्छा का प्रादुर्भाव होते ही अचानक ज्ञानयोग कठिन है। इस प्रसंग में ज्ञानयोग को ज्ञाननिष्ठा के रूप में प्रतिपादन करते हुए भगवद्गीता में कहा गया है-

न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।

न च सन्न्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति॥ भगवद्गीता-३/४

अर्थात् वेदादि शास्त्रविहित कर्मों के अनारम्भ से कोई मनुष्य ज्ञाननिष्ठा को नहीं प्राप्त कर सकता है तथा आरभ्य शास्त्रविहित कर्मों के न करने से भी ज्ञाननिष्ठा को नहीं प्राप्त कर सकता।

'अकर्म' के रूप में ज्ञानयोग

श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग को 'अकर्म' के रूप में प्रतिपादित किया गया है –

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मण:।

शरीरयात्रापि च न ते प्रसिद्ध्येदकर्मण:॥ योगसूत्र-३/८

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिता:।

तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥ भगवद्गीता-४/१६

यहाँ पर 'अकर्म' शब्द से कर्ता आत्मा यथार्थ स्वरूप ज्ञान बतलाया गया है।

'संन्यास'के रूप में ज्ञानयोग

श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञानयोग को सन्न्यास नाम से भी अभिहित किया गया है। इस सन्दर्भ में गीता के कुछ श्लोकों को उपस्थापित किया जा सकता है जोन् निम्न हैं-

सन्न्यासं कर्मणा कृष्ण पुनर्योगं च शंससि।

यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्॥ योगसूत्र-५/१

सन्न्यास: कर्मयोगश्च नि:श्रेयसकरावुभौ।

तयोस्तु कर्मसन्न्याअसात्कर्मयोगो विशिष्यते॥ योगसूत्र-५/२

'सांख्य'के रूप में ज्ञानयोग

सङ्ख्या बुद्धि: बुद्ध्यावधारणीयम् आत्मतत्त्वं साङ्ख्यम्। ज्ञायते आत्म तत्त्वे तज्ज्ञानाय या बुद्धि: अभिधेया। अर्थात् बुद्धि का नाम साङ्ख्य है,इसलिए बुद्धि से धारण किये जाने वाले आत्मतत्त्व का नाम साङ्ख्य है। इस सन्दर्भ में निम्न श्लोक भी द्रष्टव्य हैं-

साङ्ख्ययोगौपृथग्बाला: प्रवदन्ति न पण्डिता:।

एकमप्यास्थित: सम्यगुभयोर्विन्दते फलम्॥ योगसूत्र- ५/४

यत्साङ्ख्यै: प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते।

एकं साङ्ख्यं च योगं च य: पश्यति स पश्यति॥ योगसूत्र- ५/५

आत्मा एवं शरीर का स्वभाव

- आत्मा एवं शरीर दोनों पृथक्-पृथक् हैं फिर भी अज्ञानी जन शरीर को ही आत्मा मान लेते हैं, अत: शरीर के नाश होने से आत्मा के नाश का ज्ञान कर लेते हैं।
- अर्जुन भी इसी विषाद से ग्रस्थ थे,इसलिए भगवान् श्रीकृष्ण आत्मा और शरीर के स्वरूप को अलग-अलग रूप से प्रतिपादित किया है।
- जहाँ आत्मा नित्य,अविनाशी,अपरिणामी,मर्त्यधर्म आदि से रहित है वहीं शरीर अनित्य, परिणामी, उत्पत्ति-विनाशसील आदि धर्मों से युक्त है। अत: शरीर से आत्मा की विलक्षणता का ज्ञान ही ज्ञानयोग है।
- जब साधक या मुमुक्ष पुरुष आत्मा का साक्षात्कार कर लेता है तो उसे ज्ञानयोगी कहा जाता है। अत: शरीर और आत्मा के पृथग्विवेचन के लिए कुछ उद्धरण निम्न रूप से दर्शाये जा सकते हैं-

मर्त्यशरीर का स्वभाव

शरीर के स्वभाव को भी गीता में विस्तृत रूप से प्रतिपादित किया गया है। इनमें से कुछ उल्लेख निम्नवत् हैं-

देहिनोऽमिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥ भगवद्गीता- २/१३
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदु:खदा:।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत॥ भगवद्गीता- २/१४
अन्तवन्त इमे देहा: नित्यस्योक्ता शरीरिण:। भगवद्गीता- २/१८

शरीर की पूर्वावस्था तथा अपरावस्था का विवेचन करते हुए कहा गया है-

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिवेदना॥ भगवद्गीता- २/२८

आत्मा का स्वभाव

शरीर के स्वभाव विवेचन के पश्चात् आत्मा के स्वभाव का वर्णन अपेक्षित है। दोनों के धर्म भिन्न-भिन्न हैं। आत्मा के स्वभाव का वर्णन करते हुए गीता के द्वितीय अध्याय में कहा गया है-

न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमेजनाधिपा:।

न चैव न भविष्याम: सर्वे वयमत: परम्॥ भगवद्गीता- २/१२

इस प्रकार दोनों के स्वभाव को जानने वाला पुरुष शोक नहीं करता है।

दोनों के स्वभाव को भली-भाँति जानने वाला गतासु और अगतासु के विषय में शोक नहीं करता है।

आत्मा की अबध्यता

आत्मा अबध्य है। यह कभी भी किसी के द्वारा मारा नहीं जा सकता है। आत्मा की अब्ध्यता के विषय में भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुन को अनेश: उपदेश भी दिये हैं। आत्मा की अबध्यता के सम्बन्ध में गीता में उल्लिखित कुछ श्लोकों को उदाहरण स्वरूप निम्नरूप से देखा जा सकता है-

देहीनित्यमबध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत।

तस्मात्सर्वाणिभूतानि न त्वं शोचितुमर्हति॥ भगवद्गीता-२/३०

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावक:।

न चैनं क्लेद्यन्त्यापो न शोषयति मारुत:॥ भगवद्गीता-२/२३

अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।

नित्य: सर्वगत: स्थाणुरचलोऽयं सनातन:॥ भगवद्गीता- २/२४

आत्मा की नित्यता

आत्मा नित्य एवं अविनाशी है। वह न तो उत्पन्न होता है और न ही उसका कभी नाश होता है। आत्मा के इस नित्यत्व तथा अविनाशित्व के विषय में गीता में अनेकों स्थलों पर उल्लेख किया गया है जिनमें से आत्मा की नित्यता व अविनाशित्व की सिद्धि के लिए कुछ श्लोकों को उपस्थापित किया जा सकता है जो निम्न प्रकार से द्रष्टव्य हैं-

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।

विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति॥ भगवद्गीता- २/१७

अनाशिनोऽप्रमेयस्य...। भगवद्गीता-२/१८

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्। भगवद्गीता-२/२१

ज्ञेयतत्त्व के रूप में आत्मा

गीता में आत्मा को ज्ञेयतत्त्व के रूप में भी उपस्थापित किया गया है। इसी आत्मा का साक्षात्कार कर लेना ही ज्ञानयोग का लक्ष्य है। अत: आत्मस्थ पुरुष को ही ज्ञानयोगी कहा गया है। आत्मा के ज्ञेयत्व के सन्दर्भ में कुछ उद्धरण निम्न प्रकार से द्रष्टव्य हैं-

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।

अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥ भगवद्गीता-१३/१२

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।

भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च॥ भगवद्गीता-१३/१६

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमस: परमुच्यते।

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्॥ भगवद्गीता- १३/१७

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासत:।

मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते॥ भगवद्गीता- १३/१८

आत्मनिष्ठयोगी का लक्षण

आत्मनिष्ठयोगी ही ज्ञानयोगी कहा जाता है। ऐसा पुरुष जिसकी सांसारिक विषयों के भोग की इच्छा नष्ट हो चुकी हो। आत्मनिष्ठयोगी की स्थिति के विषय में भगवद्गीता के अनेक स्थलों पर चर्चा की गई है जिसका संक्षिप्त विवेचन निम्न रूप से द्रष्टव्य है-

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।

यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने:॥ भगवद्गीता-२/६८

विहाय कामान्य: सर्वान्पुमांश्चरति नि:स्पृह:।

निर्ममो निरहङ्कार: स शान्तिमधिगच्छति॥ भगवद्गीता- २/७१

एषा ब्राह्मी स्थिति: पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।

स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्म निर्वाणमृच्छति॥ भगवद्गीता- २/७०

सन्तुष्ट: सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चय:।

मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्त: स मे प्रिय:॥ भगवद्गीता- १२/१४

ज्ञानयोगियों के लिए कर्मयोग

ज्ञानयोगियों के लिए भी कर्म आवश्यक है। इसके विषय में गीता में कर्मयोग के प्रसङ्ग में भी विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। ज्ञानयोगियों के लिए कर्मयोग लोकसंग्रहार्थ आवश्यक है। जगत् के उद्धार के लिए भी यह आवश्यक हैं। कुछ बिन्दुओं के माध्यम से इसकी अपरिहार्यता स्पष्ट की जा सकती है जो निम्न प्रकार से हैं-

ज्ञानयोगियों के लिए भी आत्मा के अकर्तापन का बोध करते हुए कर्मयोग का साधन श्रेयष्कर है।

विशिष्ट रूप से प्रसिद्धलभ्य पुरुष को विशेष रूप से कर्मयोग का आचरण कर्तव्य है। कर्मयोग में भी ज्ञानयोग की प्रधानता रहती है।

सम्पूर्ण जगत् की सृष्टि के लिए भी कर्मयोग का उपदेश किया गया है। भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं जगत् के कल्याण के लिए कर्मयोगी के रूप में दिखाई देते हैं-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ भगवद्गीता-४/७

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।

धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥ भगवद्गीता- ४/८

ज्ञानयोग या बुद्धियोग का फल

श्रीमद्भगवद्गीता के द्वितीय अध्याय का नाम सांख्ययोग है, संख्या को ही बुद्धि भी कहते हैं-

सङ्ख्या बुद्धि: बुद्ध्यावधारणीयम् आत्मतत्त्वं साङ्ख्यम्। ज्ञायते आत्म तत्त्वे तज्ज्ञानाय या बुद्धि: अभिधेया। अर्थात् बुद्धि का नाम साङ्ख्य है,इसलिए बुद्धि से धारण किये जाने वाले आत्मतत्त्व का नाम साङ्ख्य है। इसी साङ्ख्य को ज्ञानयोग भी कहते हैं। जैसा कि पूर्व में विवेचन किया जा चुका है। अत: इस ज्ञानयोग या बुद्धियोग का फल निम्न रूप से विवेच्य है-

एषा तेऽभिहिता साङ्ख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु।

बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि॥ भगवद्गीता- २/३९

व्यवसायात्मिका बुद्धि:..। भगवद्गीता-२/४१

व्यवसायातिमा बुद्धि: समाधौ न विधीयते॥ भगवद्गीता-२/४४

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिता:।

बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागता:॥ भगवद्गीता-४/१०

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिण:।

जन्मबन्धविनिर्मुक्ता: पदं गच्छन्यनामयम्॥ भगवद्गीता- २/५१

यदा ते मोहकलिकं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।

तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च॥ भगवद्गीता-२/५२

धन्यवाद